दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं॰ लि॰

The Oriental Insurance Co. Ltd.

वर्ष -2024-25 अंक – द्वितीय
अप्रैल – सितम्बर 2024

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर की गृह पत्रिका

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय - चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण, 7-रेस कोर्स रोड, इंदौर - 452002

दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कं॰ लि॰
राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यालय,
इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर
गृह पत्रिका : दिविशा
अंक : द्वितीय
2024-25

संरक्षक
संजीब एड्डी
उप महा प्रबन्धक

मार्गदर्शक
तिलक राज़
क्षेत्रीय प्रबन्धक

संपादक
पम्मी शिंदे वासुरे
राजभाषा अधिकारी

सहयोग
राजेंद्र सोलंकी
वरिष्ठ सहायक

सम्पादकीय पता :
दि ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय - चतुर्थ तल, इंदौर विकास प्राधिकरण,
7-रेस कोर्स रोड, इंदौर – 452002

ई-मेल :
pammi.shinde@orientalinsurance.co.in

अनुक्रमणिका

- उपमहाप्रबंधक का संदेश 1
- क्षेत्रीय प्रबन्धक का संदेश.....2
- संपादकीय 3
- कविता - लौट आया हूँ 4
- हिन्दी भाषा साहित्य 5
- मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय.....6
- हिन्दी शब्दकोश 7
- बाबा साहब अंबेडकर जयंती का आयोजन 8
- क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा कार्यशाला का आयोजन 9
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारत मे बीमा उद्योग 10-12
- गौतम बुद्ध कथा 13
- केबीओ-3 इंदौर द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 14
- दोस्ती 15
- पर्यावरण और जीवन 15
- कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगुतेली 16
- क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर मे स्वतन्त्रता दिवस 17
- मातृभाषा हिन्दी 18
- बेटी की पुकार 18
- हँसते –हँसते.....19
- असली धरोहर 20
- हिन्दी पखवाड़ा -2024 21-22
- पचपन के पार बचपन 23
- एक प्याला गरम चाय का ठंडा अहसास 24
- समय की अनोखी यात्रा 25
- क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर मे स्वछता पखवाड़ा 26

गृह पत्रिका केवल आंतरिक वितरण के लिए है । पत्रिका मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार है , तथा संपादक मण्डल का पत्रिका मे व्यक्त विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

.....संदेश .....

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर , हिन्दी पत्रिका "दिविशा" के द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है ।

राजभाषा हिन्दी सांस्कृतिक विविधता मे एकता का प्रतीक है । हिन्दी विभिन्न भाषा- भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है । राजभाषा हिन्दी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है । यह भारत के जन – जन के मन मे बसी भाषा है । अतः हमारा संवैधानिक दायित्व एवं नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिन्दी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएँ । मुझे विश्वास है कि पत्रिका मे प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने मे सफल होगी ।

कार्यालयीन पत्रिका कर्मचारियों की सृजनशीलता का माध्यम होने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति गौरव अनुभव भी कराती है । अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने पर राजभाषा हिन्दी केवल कार्यालय तक सीमित नहीं रहती बल्कि जनमानस की अपनी हो जाती है । मुझे विश्वास है पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा के प्रचार -प्रसार के उद्देश्य को पूरा करने मे सफल होगा ।

शुभकामनाओं सहित .....

संजीब ऐड्डी
उप महा प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

.....संदेश.....

क्षेत्रीय कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "दिविशा" के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है । कार्यालय मे राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों मे रचनात्मकता बढ़ाने व राजभाषा हिन्दी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने मे पत्रिका ने बहुमूल्य योगदान प्रदान किया है ।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोगो को बढ़ाने मे गृह पत्रिका का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है । सभी को अपने कार्य व्यवहार मे आम जीवन मे प्रचलित हिन्दी भाषा शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिकों तक सरकारी नीतियों / कार्यक्रमों की जानकारी पहुँच सके।

पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन मे योगदान देने हेतु मै सभी रचनकारों एवं सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ व आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा और भविष्य मे भी आप लोग अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध करते रहेंगे ।

शुभकामनाओं सहित .....

तिलक राज
क्षेत्रीय प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

.....सम्पादकीय.....

आप सभी प्रबुद्ध पाठकों को मेरा प्रणाम। क्षेत्रीय कार्यालय- इंदौर की गृह पत्रिका "दिविशा" के प्रकाशन पर अत्यंत गौरव व हर्ष से अनुभूत हूँ। इस माध्यम से राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी भाषा की प्रगति मे योगदान किया जा रहा है। हिन्दी हमारे देश के प्रत्येक जनमानस के हृदय मे किसी न किसी रूप मे विराजित है और पत्रिका उन व्यक्तिगत विचारो/ भावों को भाषा प्रदान करने का माध्यम है। पत्रिका मे हमने हर तरह के विषयों को समाहित करने का प्रयास किया है एवं हर वर्ग के कार्मिकों की मौलिक रचनाओं को इसमे सम्मिलित किया गया है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का मंत्र कार्यालयीन हिन्दी और जन मानस की हिन्दी के मध्य भेद को मिटाना है जिससे कि हिन्दी भाषा मे कार्य की जटिलता को न्यूनतम किया जा सके और प्रत्येक भारतवासी हेतु हिन्दी आसान भाषा बन सके। पत्रिका के माध्यम से इसी उद्देश्य की पूर्ति का प्रयास किया गया है इसीलिए पत्रिका मे प्रकाशित रचनाओं की भाषा सरल व बोधगम्य है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतू पूरे ओरिएंटल परिवार को असंख्य धन्यवाद। आशा ही नहीं विश्वास है कि पत्रिका आप सभी पाठकों को पसंद आएगी। पत्रिका को और अधिक रूचिकर बनाने हेतु आपके अमूल्य विचार अवश्य साझा करे।

सादर.....

पम्मी शिंदे वासुरे
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

“ लौट आया हूँ “

मैं पुनः उसी कलकल बहती जीवन नदी में शांतचित्त अपने बुजुर्गों से मिल कर

लौट आया हूँ ,

यमनोत्री के गरम कुंड से धान पका

गंगोत्री की शीतलता मे सारा ताप बहा

जहां ठहर जाने का हो मन, उस आँगन मे फिर आऊँगा, कह कर लौट आया हूँ ,

सदियों से ध्यानस्थ ऋषिगण पर्वत के रूप मे विराजित जहां ,

जिनके गले लग बारबार बरबस बादलों के नयन बरस पड़ते,

गगन जिनके शीश अपना भार टिकाए सुस्ताता ,

जिनके कंधों से गिरती अविरल मन्दाकिनी, अलकनंदा, यमुना, गंगा

मैं वहीं बाबा केदारनाथ के गले लग अश्रुओं में अपने ताप संताप बहा कर लौट आया हूँ ,

माँ सरस्वती का दर्शन, व्यास गादी को प्रणाम निवेदन कर, पांडव गए स्वर्ग जिस राह उसपर कदम धर,

असीम भारत की अंतिम सीमा पर राष्ट्र रक्षकों से मिलकर लौट आया हूँ ,

मैं लौट आया हूँ पितरों का तर्पण कर, प्रार्थनाएँ अर्पण कर

आदि केदारेश्वर क्षेत्र ध्यानस्थ नारायण नर की गोद मे भगवत कथा प्रसाद पा कर लौट आया हूँ ,

नैहर का सा सुख देती धरा जहां की हरियाली, मैं वहीं प्रभु के दर पर दंडवत लगा कर लौट आया हूँ,

मैं पुनः उसी पल बहती जीवन नदी में शांतचित्त अपने बुजुर्गों से आशीष पा कर लौट आया हूँ

राजेंद्र सोलंकी
वरिष्ठ सहायक (लेखा विभाग)
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

हिन्दी भाषा साहित्य

हिन्दी साहित्य हिन्दी भाषा का रचना संसार है। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा में तलाशी जा सकती हैं। परंतु हिन्दी साहित्य की जड़ें मध्ययुगीन भारत की ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली और मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य में पाई जाती हैं। हिंदी में गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ और इसने अपनी शुरुआत कविता के माध्यम से जो कि ज्यादातर लोकभाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई।

इतिहास

बाबर, हुमायूँ और शेरशाह के समय में हिन्दी को राजकीय संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु व्यक्तिगत प्रयासों से 'पद्मावत' जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थ की रचना हुई। मुग़ल सम्राट अकबर ने हिन्दी साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। मुग़ल दरबार से सम्बन्धित हिन्दी के प्रसिद्ध कवि राजा बीरबल, मानसिंह, भगवानदास, नरहरि, हरिनाथ आदि थे। तुलसीदास एवं सूरदास मुग़ल काल के दो ऐसे विद्वान थे, जो अपनी कृतियों से हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमर हो गये। अर्ब्दुरहमान ख़ानख़ाना और रसखान को भी इनकी हिन्दी की रचनाओं के कारण याद किया जाता है। इन सबके महत्त्वपूर्ण योगदान से ही 'अकबर के काल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल' कहा गया है। अकबर ने बीरबल को 'कविप्रिय' एवं नरहरि को 'महापात्र' की उपाधि प्रदान की। जहाँगीर का भाई दानियाल हिन्दी में कविता करता था।
शाहजहाँ के समय में सुन्दर कविराय ने 'सुन्दर श्रृंगार', 'सेनापति ने 'कवित्त रत्नाकर', कवीन्द्र आचार्य ने 'कवीन्द्र कल्पतरु' की रचना की। इस समय के कुछ अन्य महान् कवियों का सम्बन्ध क्षेत्रीय राजाओं से था,
जैसे- बिहारी महाराजा जयसिंह से, केशवदास ओरछा से सम्बन्धित थे। केशवदास ने 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' एवं 'अलंकार मंजरी' जैसी महत्त्वपूर्ण रचनायें की। अकबर के दरबार में प्रसिद्ध ग्रंथकर्ता कश्मीर के मुहम्मद हुसैन को 'जरी कलम' की उपाधि दी गई। बंगाल के प्रसिद्ध कवि मुकुन्दराय चक्रवर्ती को प्रोफ़ेसर कॉवेल ने 'बंगाल का क्रैब' कहा है। हिन्दी में पहली प्रमुख
पुस्तक12वीं सदी में लाहौर के चंदबरदाई का पृथ्वीराजरासो महाकाव्य है, जिसमें इस्लामी आक्रमण से पहले दिल्ली के अंतिम हिंदू राजा पृथ्वीराज के साहसिक कार्यों का वर्णन किया गया है, यह पुस्तक राजपूतों के दरबार की भाट परंपरा पर आधारित है, फ़ारसी कवि अमीर ख़ुसरो की कविताएँ भी उल्लेखनीय हैं,
जिन्होंने अवधी में लिखा। हिन्दी में अधिकतर प्रारंभिक साहित्य की प्रेरणा धर्म पर आधारित है।

आदिकाल

हिन्दी साहित्य के आदिकाल को आलोचक 1400 इसवी से पूर्व का काल मानते हैं जब हिन्दी का उद्भव हो ही रहा था। हिन्दी का
विकास दिल्ली, कन्नौज और अजमेर क्षेत्रों में हुआ माना जाता है। पृथ्वीराज चौहान का उस वक़्त दिल्ली में शासन था और चंदबरदाई नामक उसका एक दरबारी कवि हुआ करता था। कन्नौज का अंतिम राठौड़ शासक जयचंद था जो संस्कृत का बहुत बड़ा संरक्षक था।

भक्तिकाल

हिन्दी के महान् कवि तुलसीदास ने अधिकतर लेखन कार्य अवधी भाषा में किया और राम की पूजा को हिंदू धर्म का केंद्र बनाया, उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण रचना रामचरितमानस है, जो संस्कृत रामायण से प्रेरित है। यह हिन्दीभाषी क्षेत्र का पवित्र हिंदू ग्रंथ बन गया है तथा प्रत्येक साल लोकप्रिय रामलीला के रूप में इसका मंचन होता है।

रीतिकाल

भक्तिकाल के बाद रीतिकाल का सूत्रपात हुआ, जिसके रचनाकारों ने समकालीन ऐतिहासिक संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी। भोग-विलास, प्रेम-सौंदर्य और श्रृंगारिकता से परिपूर्ण इस युग की कविताओं को जिन रचनाकारों ने रूप दिया,
उनमें मतिराम, केशव, बिहारी, घनानंद, बोधा आदि का नाम उल्लेखनीय है। प्रेमचंद के साहित्य एवं लघु कहानियों में सामान्य ग्रामीण जीवन का वर्णन है तथा बनारस के भारतेंदु हरिश्चंद्र, जिन्होंने ब्रजभाषा में लिखा।

आधुनिक काल

आधुनिक हिन्दी साहित्य की जड़े कविता एवं नाटक में भारतेंदु हरिश्चंद्र के साहित्य में, आलोचना और अन्य गद्य लेखन में महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा कथा साहित्य में प्रेमचंद के साहित्य में हैं, 19वीं सदी के उत्तरार्ध की इस अवधि में मुख्य रूप से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी से अनुवाद का ज़ोर रहा। राष्ट्रवाद एवं आर्य समाज के सामाजिक सुधार आंदोलन से प्रभावित होकर लंबी वर्णनात्मक कविताएं,
जैसे मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद द्वारा नाटक तथा चतुरसेन शास्त्री एवं वृंदावनलाल वर्मा द्वारा ऐतिहासिक उपन्यास रचे गए। इन उपन्यासों की पृष्ठभूमि मुख्यत: मौर्य, गुप्त एवं मुग़लकालीन थी।

सत्याग्रह एवं असहयोग आन्दोलन

इस अवधि के बाद महात्मा गांधी के सत्याग्रह एवं असहयोग आंदोलनों का दौर आया, जिसने माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त एवं सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कवियों तथा प्रेमचंद व जैनेंद्र कुमार जैसे उपन्यासकारों को प्रेरित किया। 1930 के दशक के सर्जनात्मक कवियों सुमित्रानंदन पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी
वर्मा ने अंग्रेज़ी एवं बांग्ला कविता की स्वच्छंदतावादी तथा मध्यकालीन हिन्दी कविता की रहस्यवादी परंपरा से प्रेरणा ली। प्रतिक्रियास्वरूप मार्क्सवादी कवि रामविलास शर्मा और नागार्जुन तथा हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय एवं भारत भूषण अग्रवाल जैसे प्रयोगवादी कवि सामने आए। निराला, जिनका विकास रहस्यवादी, स्वच्छंदतावादी से यथार्थवादी एवं प्रयोगवादी कवि के रूप में हुआ। 1960 के दशक में मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं रघुवीर सहाय जैसे मौलिक कवि हुए।

हिन्दी पत्रिका आलेख

मुश्किल है अपना मेल प्रिय , ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

अनुभव श्रीवास्तव
प्रशासनिक अधिकारी
व्या॰ का॰ शिवपुरी

****

तुम fellowship की डिप्लोमा सी
मै metric पास प्रिय
तुम hard disk सी कठोर हृदय
मै software सा नर्म प्रिय
तुम हो popup pdf सी
मै admin का email प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

तुम INLIAS की KYC सी
मै ADHAR और PAN प्रिय
तुम CAR सी जटिल पॉलिसी
मै SIP का उत्पाद प्रिय
प्रेम का Claim लाया हूँ
Table पर न खेल प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

तुम ADD-ON सी महंगी शर्त
मै RISK expired condition हूँ
तुम silent risk की शांत प्रवृत्ति
मै ICR का शोर प्रिय
तुम कंपनी के Circular जैसी
मै उसका trailing mail प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

तुम Mega-risk की प्रीमियम जैसी
मै Motor OD claim प्रिय
तुम Hi-tech Motorola सी
मै SVC का फोन प्रिय
तुम Marine claim की SRCC
मै ICC का derail प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

****

तुम STFI का wide cover
मै RID का product हूँ
तुम MOTOR जैसा भव्य विभाग
मै BANCA का आश्वासन हूँ
तुम RTI की गारंटी सी
मै Excess का हूँ clause प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

तुम HRMS module जैसी
मै Voucher की फ़ाइल प्रिय
तुम Nil-dep से सुशोभित नारी
मै Terrorism का बोझ भारी
मै Outlook का outbox हूँ
तुम उसका Thumbnail प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

तुम lok adalat की बैठक जैसी
मै orphan claim का पेज प्रिय
तुम permit सी आवश्यक शर्त
मै PUC की फोटोकोपी
तुम court के अवार्ड सी स्वीकृत
मै contempt की जेल प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

मेरा Insurable interest तुझमे
तू contribution मेरी धड़कन की
तू secured packed container
मै cotton की bale प्रिय
करदे disclose अपनी conditions
वरना घट जाएगा moral प्रिय
मुश्किल है अपना मेल प्रिय, ये प्यार नहीं है खेल प्रिय

-------*****हिन्दी शब्दकोश*****------

स्वतः स्पष्ट टिप्पणी	Self-explanatory note	छटनी	Retrenchment
अधिवेशन	Session	जावक	Outward
अनापत्ति प्रमाण पत्र	No dues certificate	जांच समिति	Enquiry committee
अप्राधिकृत	Unauthorized	तैनाती	Posting
अर्जित अवकाश	Earned leave	तदर्थ	Ad hoc
अधिनियम	Act	दैनिक मजदूरी	Daily wages
अवलोकन	Perusal	नियुक्ति	Appointment
अपेक्षित सूचना	Requisite information	निष्पादन	Performance
अनुमति	Permission	निलंबित करना	To suspend
अनुशासनिक कार्यवाई	Disciplinary action	निपटान	Disposal
अधीनस्थ	Subordinate	निष्ठावान	Sincere
अग्रिम	Advance	निरीक्षण	Inspection
अभ्यावेदन	Representation	संगरोध छुट्टी	Quarantine leave
अल्प सूचना	Short notice	प्रतिनियुक्ति	Deputation
अनुसंधान	Research	पदोन्नति	Promotion
आवक	Inward	पदावनित पारपत्र	Demotion
आयात	Import	परिणत अवकाश	Commuted leave
आकस्मिक अवकाश	Casual leave	प्रतिबंधित अवकाश	Restricted leave
आचरण नियमावली	Conduct rule	प्रतिपूरक अवकाश	Compensatory leave
आचरण संहिता	Code of conduct	प्रसूति अवकाश	Maternity leave
आदेश	Order	प्रत्यावर्तन	Reversion
आरक्षण	Reservation	परिश्रमिक	Remuneration
औपचारिकता	Formality	प्रस्ताव	Proposal
स्थगित	Postpone	प्रतिलिपि सूचनार्थ	Copy of information
कार्यालय पद्धति	Office procedure	बर्खास्त	To dismiss
कार्यालय प्रति	Office copy	भविष्य निधि	Provident fund
कार्यवृत्त	Minutes	मूल प्रति	Original copy
कार्यसूची	Agenda	मसौदा	Draft
विरुद्ध / खिलाफ	Against	लेखा परीक्षा	Audit
गोपनीय	Confidential	लोक हित	Public interest
गोष्ठी	Seminar	लेखाकार	Accountant
चेतावनी	Warning	वेतन नियमन	Pay fixation
चर्चा	Discussion	विभागीय	Departmental
संस्वीकृति	Sanction	वित्तीय अनुमोदन	Financial approval

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर व अधीनस्थ कार्यालयों मे 14 अप्रेल को अंबेडकर जयंती प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ व समाज सुधारक बाबा साहब भीम राव अंबेडकर के 133वें जन्म दिवस को बहुत हर्ष उल्लास के साथ मनाई गई । आयोजन की कुछ झलकियाँ ।

क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

व्य॰ का॰- स्नेह नगर इंदौर

व्य॰ का॰ – पलसिया, इंदौर

व्य॰ का॰ – उज्जैन

मु॰ व्य॰ का॰ – इंदौर

व्य॰ का॰ – खंडवा

व्य॰ का॰ – रतलाम

व्य॰ का॰ – भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय - इंदौर द्वारा कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार राजभाषा विभाग एवं प्रधान कार्यालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रमानुसार क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर द्वारा कार्यालय के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला मे भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण से राजभाषा अधिकारी सुश्री नाज़मा खान व्याख्याता के रूप मे उपस्थित रही एवं कार्यशाला विषय " राजभाषा नियम एवं क्रियान्वयन" प्रतिभागियों को विस्तार पूर्वक समझाया । कार्यशाला का संचालन राजभाषा अधिकारी पम्मी शिंदे द्वारा किया गया। व्याख्याता ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक कार्यालय जो कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यरत है के द्वारा अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी अथवा द्विभाषी किया जाना संवैधानिक तौर पर अपेक्षित व अनिवार्य है । राजभाषा नियमों को सरल रूप मे परिभाषित कर समस्त प्रतिभागियों के संज्ञान मे लाया गया तथा ये आश्वासन लिया गया वे अपना अधिकांश कार्य हिन्दी मे करने के लिए प्रयासरत रहेंगे एवं अधीनस्थ कर्मचारियों को भी राजभाषा नियमों से अवगत कराएंगे । क्षेत्रीय प्रबन्धक द्वारा समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित कर यह सुनिश्चित किया गया कि वे कार्यालयीन कार्यों मे हिन्दी भाषा को अपनाएँगे व इसके विकास मे सहायक होंगे तत्पश्चात कार्यशाला के उपसंहार मे उप महा प्रबन्धक महोदय द्वारा हिन्दी भाषा की उपयोगिता व आवश्यकता एवं महत्तवत्ता पर प्रकाश डाला गया ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस A.I.) और भारत में बीमा उद्योग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस A.I.) बीमा उद्योग को कई महत्वपूर्ण तरीकों से बदल रही है। यहां कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं जहां A.I. का उपयोग किया जा रहा है:

1. हामीदारी और जोखिम मूल्यांकन

स्वचालित हामीदारी: A.I. एल्गोरिदम पारंपरिक तरीकों की तुलना में जोखिमों का अधिक सटीक और कुशलता से आकलन करने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण करता है। इसमें सोशल मीडिया, क्रेडिट स्कोर और यहां तक कि पहनने योग्य उपकरणों (Wearable smart devices) से डेटा का मूल्यांकन शामिल है।

पूर्वानुमानित विश्लेषण: A.I. मॉडल ऐतिहासिक डेटा के आधार पर भविष्य के जोखिम की भविष्यवाणी करते हैं, जिससे बीमाकर्ताओं को प्रीमियम का अधिक सटीक मूल्य निर्धारण करने की अनुमति मिलती है।

2. दावा प्रसंस्करण

धोखाधड़ी का पता लगाना: A.I. सिस्टम डेटा में पैटर्न और विसंगतियों का विश्लेषण करके धोखाधड़ी वाले दावों का पता लगा सकता है जो मानव निरीक्षकों से छूट सकते हैं।

स्वचालित दावा प्रबंधन: A.I.-संचालित चैटबॉट और आभासी सहायक नियमित दावों को संभालते हैं, प्रक्रिया को तेज करते हैं और परिचालन लागत को कम करते हैं।

3. ग्राहक सेवा और अनुभव

चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट: A.I.-संचालित चैटबॉट 24/7 ग्राहक सेवा प्रदान करते हैं, प्रश्नों का उत्तर देते हैं और नीति संबंधी जानकारी में सहायता करते हैं।

वैयक्तिकृत सेवाएँ: AI वैयक्तिकृत नीति अनुशंसाओं और लक्षित विपणन अभियानों की पेशकश करने के लिए ग्राहक डेटा का विश्लेषण करता है।

4. विपणन और बिक्री

ग्राहक विभाजन: A.I. बीमाकर्ताओं को अनुरूप विपणन रणनीतियों के साथ विशिष्ट ग्राहक खंडों को पहचानने और लक्षित करने में मदद करता है।

लीड स्कोरिंग: A.I. मॉडल संभावित ग्राहकों की बीमा खरीदने की संभावना का आकलन करते हैं, जिससे बिक्री टीमों को लीड को प्राथमिकता देने में मदद मिलती है।

5. परिचालन दक्षता

प्रक्रिया स्वचालन: A.I. नियमित प्रशासनिक कार्यों को स्वचालित करता है, लागत कम करता है और अधिक जटिल कार्यों के लिए मानव संसाधनों को मुक्त करता है।

दस्तावेज़ प्रसंस्करण: प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) जैसे A.I. उपकरण दस्तावेज़ों से डेटा निकालते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं, वर्कफ़्लो को सुव्यवस्थित करते हैं।

6. उत्पाद विकास

व्यवहार विश्लेषण: एआई ग्राहकों के व्यवहार और प्राथमिकताओं का विश्लेषण करता है, जिससे बीमाकर्ताओं को नए उत्पाद विकसित करने में मदद मिलती है जो बाजार की मांगों को बेहतर ढंग से पूरा करते हैं।

उपयोग-आधारित बीमा (यूजर बेस्ड इंटरफ़ेस): A.I. प्रौद्योगिकियां, जैसे टेलीमैटिक्स, बीमाकर्ताओं को यूजर बेस्ड इंटरफ़ेस पॉलिसियों की पेशकश करने की अनुमति देती हैं जो वास्तविक उपयोग और व्यवहार के आधार पर प्रीमियम को समायोजित करती हैं।

7. जोखिम प्रबंधन और रोकथाम

पूर्वानुमानित रखरखाव: A.I. बीमित संपत्तियों, जैसे मशीनरी या वाहनों के लिए संभावित जोखिमों और रखरखाव की जरूरतों की भविष्यवाणी करता है, जिससे दावों को होने से पहले रोकने में मदद मिलती है।

स्वास्थ्य निगरानी: पहनने योग्य उपकरण (Wearable smart devices) और AI ग्राहकों के स्वास्थ्य डेटा की निगरानी करते हैं, स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करते हैं और संभावित रूप से स्वास्थ्य बीमा दावों को कम करते हैं।

8. चुनौतियाँ और विचार

<u>डेटा गोपनीयता और सुरक्षा</u>: बड़ी मात्रा में संवेदनशील डेटा को संभालने के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों और नियमों के अनुपालन की आवश्यकता होती है।

<u>पूर्वाग्रह और निष्पक्षता</u>: यह सुनिश्चित करना कि एआई मॉडल पूर्वाग्रह से मुक्त हों और निष्पक्ष निर्णय लें, ग्राहक विश्वास और नियामक अनुपालन को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

लीगेसी सिस्टम के साथ एकीकरण: कई बीमाकर्ताओं को अपने मौजूदा सिस्टम और प्रक्रियाओं के साथ एआई प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

A.I. का लाभ उठाकर बीमा कंपनियां अपनी दक्षता बढ़ा सकती हैं, लागत कम कर सकती हैं और अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान कर सकती हैं। हालाँकि, उन्हें AI की क्षमता का पूरी तरह से एहसास करने के लिए डेटा गोपनीयता, पूर्वाग्रह और एकीकरण से जुड़ी चुनौतियों से भी निपटना होगा।

अनुभव श्रीवास्तव
प्रभारी (प्रशासनिक अधिकारी)
व्यवसाय कार्यालय - शिवपुरी (म° प्र°)

वैशाख पुर्णिमा के दिन बुध पुर्णिमा मनाई जाती है । क्या आप जानते है कि गौतम बुद्ध ने एक बार कहा था कि हर इंसान की चौथी पत्नी ही साथ देती है । बुद्ध के प्रारम्भिक उपदेश वाले 32 आगामी सूत्रों मे से एक मे इस कहानी का जिक्र है । एक आदमी की 4 पत्नियाँ थी । एक बार वह आदमी बीमार हो गया , समय बीतता गया और उसे अपनी मृत्यु करीब दिखने लगी । उसने चारों को बुलाया और बारी-बारी से उन्हे अपने साथ चलने को कहा। व्यक्ति ने पत्नियों से कहा मैंने तुम्हारा दिन-रात ख्याल रखा अब मै मरने वाला हूँ क्या तुम मेरे साथ चलोगी ?

पहली पत्नी ने जवाब दिया , " मुझे पता है कि आप मुझसे प्यार करते हो लेकिन मै आपके साथ नहीं जा सकती , अलविदा प्रिये ! दूसरी पत्नी ने जवाब दिया , " आप की पहली पत्नी ने आपके साथ आने से इंकार कर दिया तो फिर मै भला आपके साथ कैसे जा सकती हूँ । " तीसरी पत्नी ने कहा , " मुझे आप पर दया आ रही है और दुख भी है इसलिए मै अंतिम संस्कार तक रहूँगी पर इससे आगे नहीं जा पाऊँगी । " व्यक्ति ने चौथी पत्नी के साथ हमेशा एक दासी सा व्यवहार किया था, इसलिए उसे लगा कि मृत्यु के बाद वह कभी उसके साथ नहीं जाएगी । फिर भी उसने अपनी चौथी पत्नी से भी दूसरी दुनिया मे साथ चलने के लिए कहा । चौथी पत्नी ने तुरंत पति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । चौथी पत्नी ने जवाब दिया , " मै आपके साथ जाऊँगी कुछ भी हो मै हमेशा साथ रहने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ मै आपसे अलग नहीं रह सकती । "

कहानी का सार :

बुद्ध ने कहानी समाप्त करते हुए कहा हर पुरुष और महिला की 4 पत्नियाँ होती है और हर एक का खास मतलब होता है । पहली पत्नी या साथी हमारा शरीर होता है, जिसे हम दिन रात प्यार करते है लेकिन जीवन के अंत मे शरीर कभी साथ नहीं जाता ।

दूसरी पत्नी हमारा भाग्य, भौतिक वस्तुएँ , धन-संपत्ति है जिनके लिए हम सारा जीवन मेहनत करते है , मृत्यु के बाद यह भी साथ नहीं जाता है ।

तीसरी पत्नी का अर्थ रिश्ते नातों से है मृत्यु के बाद माता -पिता , भाई-बहन, रिश्तेदार या दोस्त कभी साथ नहीं जाते है, सब यहीं छुट जाता है ।

चौथी पत्नी हमारा मन या चेतन है, क्रोध लोभ और असंतोष कर्म के नियम है। हम अपने कर्म से कभी पीछा नहीं छुड़ा सकते है, जैसा कि पत्नी ने अपने पति से कहा था तुम जहां जाओगे मै भी तुम्हारे पीछे चलूँगी ।

इसलिए बुद्ध ने कहा था हमेशा चौथी पत्नी ही साथ देती है ।

****ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मुख्य व्यावसायिक कार्यालय, इंदौर ****

स्वास्थ्य शिविर

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मुख्य व्यावसायिक कार्यालय, इंदौर में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन श्री जितेंद्र भाटिया जी के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एच. सी. जी. कैंसर सेंटर, इंदौर की डॉक्टर कमलजीत कौर(ऑंकोलॉजिस्ट) ने नागपुर से आकर इस कैंप में विशेष रूप से अपनी टीम के साथ चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान की ।इस अवसर पर कंपनी के श्री संजीब एड्डी (उप महाप्रबंधक) , श्री तिलकराज जी , (क्षेत्रीय प्रबन्धक), श्री के. सी. मोहने (वरिष्ठ मंडल प्रबंधक) श्री राकेश गोठवाल जी (बिजनेस एसोसिएट) कार्यक्रम में उपस्थित रहें । कार्यक्रम में अभिकर्तागण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं ओरिएंटल परिवार के अन्य सदस्यों ने स्वास्थ्य शिविर का लाभ लिया ।उप महाप्रबंधक श्री संजीव ऐड्डी साहब ने चिकित्सा क्षेत्र में नई चुनौतियों के बारे में मार्गदर्शन किया एवं कंपनी की नई ईको यूथ केयर पॉलिसी के बारे में जानकारी दी एवम पॉलिसी की विशेषताओं के बारे में समझाया साथ ही मेडिक्लेम पॉलिसी के प्रति जागरूकता के लिए सभी का मार्गदर्शन किया ।

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय क्रमांक. 3 (KBO) में स्वास्थ्य शिविर आयोजित

6pm प्रतिनिधि

इंदौर। ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय क्रमांक 3 (KBO), इंदौर में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन जितेंद्र भाटिया के सहयोग से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में एच. सी.जी. कैंसर सेंटर, इंदौर की डॉक्टर कमलजीत कौर (ऑंकोलॉजिस्ट) ने नागपुर से आकर इस कैंप में विशेष रूप से अपनी टीम के साथ चिकित्सा स्वास्थ्य शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान की। इस अवसर पर कंपनी के संजीव एड्डी (उप महाप्रबंधक), तिलकराज, (क्षेत्रीय प्रबन्धक), के.सी. मोहने (वरिष्ठ मंडल प्रबंधक) राकेश गोठवाल जी (बिजनेस एसोसिएट) कार्यक्रम में उपस्थित रहें।

कार्यक्रम में अभिकर्तागण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं ओरिएंटल परिवार के अन्य सदस्यों ने स्वास्थ्य शिविर का लाभ लिया। उप महाप्रबंधक श्री संजीव रेड्डी साहब ने चिकित्सा क्षेत्र में नई चुनौतियों के बारे में मार्गदर्शन किया एवं कंपनी की नई ईको यूथ केयर पॉलिसी के बारे में जानकारी दी एवम पॉलिसी की विशेषताओं के बारे में समझाया साथ ही मेडिक्लेम पॉलिसी के प्रति जागरूकता के लिए सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन जितेंद्र वर्मा ने किया एवं आभार वरिष्ठ मंडल प्रबंधक केसी मोहने ने किया.

" दोस्ती "

दोस्ती का रिश्ता अनमोल है

ये परमपिता द्वारा प्रदत्त सुनहरा अहसास है

ये दिल के करीब होता है

ये खुशियों की बौछार लाता है

और दुखो को दूर भगाता है

दोस्त हमेशा साथ रहता है

मुसीबतों मे साथ निभाता है

दोस्ती का ये रिश्ता अनमोल है

हमेशा अपनेपन का अहसास करवाता है

दोस्ती जीवन मे गर्माहट और प्रकाश देता है

दिन हंसी और खुशी के पलों से दमकता है

चार दोस्त चार ब्रह्मांड से ज्यादा लाभकारी है

मेरे सभी दोस्त मेरे लिए हितकारी है

रहे सलामत हमारा ये दोस्तना

प्रभु से कामना है, रहे आशीर्वाद आपका

ज़ाकिर खान मंसूरी
सहायक प्रबन्धक
व्या॰ का॰ खरगोन

" पर्यावरण और जीवन "

पर्यावरण से है जीवन

पर्यावरण से है जीवन

इसे अपना दोस्त बनाते है

चलो मिलकर पेड़ लगते है

चलो मिलकर पेड़ लगते है

देते है साँसे जीवन को

करते है ये शुद्ध हवा को

आओ जाने पेड़ की माया , देती है फल फूल और छाया

आओ अपने दिलो मे हम प्राकृतिक प्रेम जागते है

इसे अपना दोस्त बनाते है , आओ मिलकर पेड़ लगते है

सागर, बादल, गगन प्रदूषित

नदी, धरा, और पवन प्रदूषित

बढ़ गया प्रदूषण इतना , साँस लेना भी हुआ मुश्किल

सुख गई नदियां तप से, रूठ गई प्रकृति भी हमसे

इसे अपना दोस्त बनाते है

चलो मिलकर पेड़ लगते है, चलो मिलकर पेड़ लगते है

लाजवंती मोटवानी
सेवानिवृत्त उप प्रबन्धक
क्षे॰ का॰ इंदौर

कहाँ राजा भोज ,कहाँ गंगु तेली

कहावतो का प्रायः शाब्दिक अर्थ होता है "जीवन के दीर्घकाल के अनुभवों को छोटे वाक्य मे कहना " । जब कोई कहानी एक जनमानस के मध्य व्यापक पैठ बना ले या जो कहानी या वाक़या बार-बार लोगो के बीच दोहराया जाए तो वो कहावत बन जाती है एसी एक कहावत है " कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली" तो आइये जानते है इसकी कहानी के बारे मे ।
दो लोगो के बीच का फर्क बताने के लिए इस कहावत का खूब इस्तेमाल होता है । राजा भोज मतलब बड़ा और गंगू तेली मतलब छोटा। कहावत से ऐसा लगता है कि इसके पीछे दो लोग रहे होंगे । एक राजा और एक दूसरा आदमी। इस कहानी मे एक या दो नहीं बल्कि पूरे तीन व्यक्तियों का समावेश है । तो कहानी कुछ इस प्रकार है -

"राजा भोज परमार वंश के 9वें राजा थे । राजा भोज 55 वर्ष के जीवन मे कई लड़ाइया लड़े और जीते। मध्य प्रदेश का धार उनकी राजधानी हुआ करता था , इतना ही नहीं उन्होने मध्य प्रदेश कि राजधानी भोपाल शहर को बसाया था । तब उस शहर का नाम था भोजपाल जो वक्त के साथ आम बोलचाल मे भूपाल और अब का भोपाल हो गया । फारसी विद्वान अल-बरूनी जो 1018-19 मे महमूद गजनवी के साथ भारत आया था , उन्होने अपनी एक कहानी मे राजा भोज का जिक्र किया था । कहानी के अनुसार राजा भोज बड़े ही विद्वान थे । उनके पास धर्म, व्याकरण, भाषा , कविता आदि का ज्ञान था । भोज ने सरस्वतीकंठभरण, श्रृंगारमंजरी, चंपूरामायण जैसे कई ग्रंथ लिखे जिसमे से 80 आज भी उपलब्ध है ।
पर कहावत के अनुरूप यहाँ बात पैसे कि नहीं बल्कि जुर्रत की थी । परमार राजा अर्जुन वर्मन के लेख से पता चलता है कि एक बार चेदीदेश के राजा गांगेयदेव कलचूरी और राजा भोज के बीच युद्ध छिड़ गया इधर राजा भोज और गांगेयदेव के बीच युद्धा चल रहा था उधर जयसिंह तेलंग नाम के राजा भी बीच मे कूद पड़े । उन्होने साथ दिया गांगेयदेव का तो एक तरफ राजा भोज और दूसरी तरफ गांगेयदेव और जयसिंह तेलंग।
खूब लड़ाई हुई । एक बार तो गोदावरी के तट पर राजा भोज को घेर लिया गया लेकिन उसके बावजूद राजा भोज कोंकण जीतने मे सफल रहे । गांगेयदेव कलचूरी और जयसिंह तेलंग की बुरी तरह हार हुई और गांगेयदेव के राज्य का कुछ भाग राजा भोज के हिस्से आ गया ।
इन दोनों राजाओं के बुरी तरह से हारने के बाद आम जनमानस के बीच " कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली " कहना शुरू हो गया , और इस प्रकार इस कहावत का निर्माण हुआ ।

→सोशल मीडिया से साभार

क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर मे स्वतन्त्रता दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय इंदौर मे स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया । उपमहाप्रबंधक महोदय श्री संजीब एड्डी द्वारा ध्वजारोहण किया गया और अपना सम्बोधन दिया । " हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने इस आज़ादी के लिए बहुत संघर्ष किया । स्वतंत्र भारत अनेकों राष्ट्रभक्तों व महापुरुषों के त्याग व बलिदान का फल है । यह दिन हमे याद दिलाता है कि हमे इस आज़ादी की कीमत समझनी चाहिए । यह दिन है उन महान नेताओं और शहीदों की कुर्बानियों को याद करने का व उन्हे सम्मानित करने का । इसलिए आज हम सभी उन महान स्वाधीनता सेनानियों व देश की सुरक्षा को समर्पित सभी वीर सैनिकों का कोटी-कोटी वंदन करते है , उन्हे नमन करते है ।

आज हमारा देश शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और बुनियादों सुविधाओं जैसे हर क्षेत्र मे प्रगति कर रहा है । देश नई उचाइयों को छु रहा है और गरीब वर्ग भी मुख्य धारा से जुड़कर गर्व अनुभव कर रहा है । तो आइये हम सब मिलकर अपने देश की तरक्की की दुआ करते है व संकल्प लेते है कि हम देश की उन्नति तरक्की के लिए कार्यरत रहेंगे व देश को आत्मनिर्भर बनाने मे भागीदार होंगे । " कार्यक्रम मे विभिन्न कार्यालयों से प्रभारीगण उपस्थित रहे ।

राजेश माधव
कार्यालय प्रमुख
व्या॰ का॰ – दमोह

मातृभाषा हिन्दी

हिंदी राजभाषा ही नहीं
स्वर लहरियों की झंकार है
हिंदी मात्र भाषा नहीं
संवेदनाओं का संचार है

जीवन के बदलते रहस्यों में
भावनाओं का विस्तार है
कथित शब्द शब्द हर स्वर
वात्सल्य ममता और प्यार है

श्रेणीवत यदि कोई बोले तो
कृतग्यता का आभार है
पीढी दर पीढी चली आ रही
मूल्यों का उपहार है

हिंदी एक, भाव शैली अनेक
शब्दों का अखण्ड विस्तार है
गद्य पद्य हो लेखन भाषण
शब्दावली का भंडार है

हिंदी ही आधार है, हिंदी ही विस्तार है
सबको अच्छी लगने वाली हिंदी ही मंगलचार है

****

अंशुमन कर्दम
सहायक प्रबन्धक
क्षे॰ का॰ इंदौर

बेटी की पुकार

ये तो विधि का विधान है मैया
जो मै तेरी कोख समाई
ईश्वर का वरदान जान के
पालने दे मुझे माई

बेटी हूँ अभिशाप नहीं हूँ
चाहूँ सहज दुलार
नीर नहीं छलके नैनन से
छलके तेरा प्यार

मै आऊँगी तेरे आँगन
मत हो उदास मैया
लोग कहेंगे मै हूँ तेरी
प्यारी सन चिरेया

भूखी प्यासी सो लूँगी माँ
लोरी तेरी सुनकर
खुशियों से भर दूँगी आँगन
पग-पग ठुमक-ठुमक कर

विनती करूँ मै सुन ले मैया
मन मे धीरज रखना
बेटे की चाहत मे पड़कर
मुझको ना ठुकराना

****

कोरोना की वजह से लॉक डाउन लगा था, यह उस समय की बात है । बहुत से लोगों की तरह मुझे भी वर्क फ्रोम होम मिला था मेरी पत्नी घर का कोई भी काम बताती थी , तो मैं सहर्ष उसे पूरा कर देता था । एक दिन मैं अपना लैपटाप लेकर ऑफिस की मीटिंग अटेंड कर रहा था और मेरी मनपसंद सब्जी बनाने के लिए मेरी पत्नी किचन मे थी । सब्जी के लिए प्याज़ के छोटे छोटे टुकड़े करके डालने थे । मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि बैठे-बैठे प्याज़ काट दूँ , चूंकि लैपटाप में केवल मेरा चेहरा ही नज़र आ रहा था , इसलिए प्याज़ काटने कि बात गुप्त रहने वाली थी ।

जैसे ही मैंने प्याज़ काटना शुरू किया , मेरी आंखो से पानी आने लगा । किचन से निकलकर मेरी पत्नी प्याज़ लेने ही आई थी कि उधर से कमेंट आया , " भाभी जी का काम हँसते-हँसते किया करो, रोते - रोते नहीं " । बॉस के ऐसा कहते ही मैंने मेरी पत्नी की तरफ देखा , तो उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया क्योंकि उसकी वजह से अपने बॉस के सामने मुझे शर्मिंदा होना पड़ा था ।

प्रकाश आहूजा
वरिष्ठ सहायक
एसवीसी इंदौर

असली धरोहर

शांतनु एक कामयाब इंजीनियर होकर एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी मे उच्च पद पर नियुक्त हो गया था । इंजीनियर बनाने केलिए उसने पढ़ाई मे अथक परिश्रम किया था । पढ़ाई मे वह हमेशा अवल्ल आता था । पढ़ाई मे अच्छी रंकिंग व मेरिट के आधार पर ही उसकी नियुक्ति कंपनी मे उच्च पद पर हुई थी । उसे आकर्षक वेतन के साथ गढ़ी, बंगला आदि की सुविधा भी कंपनी द्वारा दी गई थी , इसलिए उसकी जीवनशैली शानदार व सुविधाजनक थी । लेकिन उसकी व्यस्त जिंदगी मे मटा पिता के लिए समय नहीं था । उसके बूढ़े मटा पिता गाँव मे रहते थे , जो कभी-कभी फोन पर उसका हल चाल पूछ लेते थे , लेकिन शांतनु हमेशा जल्दी मे रहता और बात खत्म कर देता ।

एक दिन शांतनु को कंपनी के काम से एक छोटे से कस्बे मे जाना पड़ा । काम खत्म करने के बाद उसने सोचा कि गाँव जाकर मटा पिता से मिल लिया जाए । घर पहुँचते ही माँ की बूढ़ी आंखो मे आँसू और पापा के चेहरे पर सजीव मुस्कान देखकर शांतनु का दिल पसीज गया । रात को माँ ने प्यार से खाना बना कर परोसा । खाने की सादगी और माँ के हाथो का स्वाद उसे बचपन की याद दिला गया । पापा ने अपने पुराने किस्से सुनाने शुरू किए और शांतनु ने महसूस किया कि , इन छोटी-छोटी बातों मे जो खुशी थी , वह उसकी शहर की जिंदगी मे कहीं खो गई थी ।

शांतनु को जैसे किसी ने झकझोर दिया । उसने महसूस किया कि असली सफलता सिर्फ पैसा और पद की ऊंचाई नहीं होती , बल्कि माता –पिता का साथ उनका प्रेम और आशीर्वाद ही “असली धरोहर” होते है । उस दिन शांतनु ने तय किया कि, वह माता-पिता के साथ समय बिताने और उनके प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए हमेशा समय निकलेगा । दुनिया चाहे जितनी बड़ी हो जाए , माता-पिता का साया , हमेशा जीवन का सबसे कीमती हिस्सा रहेगा ।

अजित राज
सहायक प्रबन्धक
व्या॰ का॰ उज्जैन

हिन्दी पखवाड़ा -2024

क्षेत्रीय कार्यालय व अधीनस्थ कार्यालयों मे हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन उत्साह पूर्वक किया गया । कार्यालयों मे इस अवसर पर राजभाषा विभाग भारत सरकार द्वारा प्राप्त गृह मंत्री जी का संदेश एवं कंपनी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय श्री आरआर सिंह जी के संदेश का वाचन किया गया । हिन्दी पखवाड़ा के उपलक्ष्य मे समस्त कार्यालयों मे 14 से 29 सितम्बर तक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

पचपन के पार बचपन

केवल उम्र बढ़ी नहीं अनुभव भी बढ़ा है
जीवन के हर पहलू को तुमने बखूबी गधा है
अभी निशा नहीं आई संध्या ही है जीवन की
निराश ना हो मन थे पारी है खुशहाल जीवन की

बचपना टूटे खिलौने और अविस्प के सपनों मे समा गया
यौवन जिम्मेदारियों और गाढ़ी की किश्तों मे समा गया
जिंदगी के हर रूप को तुमने बखूबी निभाया है
त्याग, तपस्या, सेवा से संतान होने का ऋण चुकाया है

माता-पिता के रूप मे हर फर्ज़ निभाया है
हमारे बेहतर कल के लिए अपना आज लौटाया है
बहुत थकान है समझते हम भी ये बात है
लेकिन जीना न छोड़ो दूर अभी रात है

आकाश को देखो धरती को देखो नदी को पुकारों
अविरल प्रेम खुद से आईना निहारों
बहुत हुई सेवा समर्पण थके परिश्रम की कहानी
अब तो सुनो अपने अन्तर्मन की बानी

स्वयं से प्रेम कारों एक दूजे को संभालों
जीवन के इस मोड पर फिर से बचपन जी डालो
जिद्दी बन जाओ जिद्दी करो अपने सपनों की
फिक्र करना छोड़ो समाज और आफ्नो की

आज और सिर्फ आज मे ही जिंदगी है
समझती है और समझाती है ये जिंदगी
हँसते मुस्कराते जीवन की शाम गुजारों
प्रेम, मस्ती, खुशियाँ अब मन मे बसा लो

सुकून से चाय की चुसकीय लो, ठहाके लगाओं
जो अब तक नहीं किया अब कर जाओं
माला ये प्रेम की ना कभी टूटने पाए
प्रभु करे आपके जीवन मे फिर से बचपन आए

दिलीप जाटवा
वरिष्ठ सहायक
क्षे॰ का॰ इंदौर

एक प्याला गरम चाय का ठंडा अहसास

अमित कुमार डिंडा
प्रशासनिक अधिकारी
व्या॰ का॰ ब्यावरा

हम भारतवासी है ,यहां लगभग हर वर्ग के व्यक्ति की सुबह बिना चाय के शुरू ही नहीं होती है ।खुशी का पल हो या क्रोध का कठिन क्षण ,एक गरम चाय का प्याला ज़हन से जब नीचे उतरता है तब मस्तिष्क और मन को सुकून की अनुभूति होती है ।

ऐसा ही वाक़या मेरे साथ भी घटित हुआ ,जब गर्मियों के दिन थे और तब यहाँ कार्यालय मे एक ग्राहक अपने मोटर दावे के निराकरन हेतु शिकायत लेकर अत्यधिक क्रोधित मन से आए हुए थे । चढ़ते सूरज की तपिश ने उनके क्रोध को नई दिशा दे रखी थी ।

एक अच्छे परामर्शदाता के रूप मे मैं शांति से उनको सुन रहा था एवं इसी बीच उनके लिए एक गरम चाय का प्रबंध किया । जैसे एक विष ही विष को काटता है वैसे ही एक गरम चाय ने भी गरम मिजाज को शांत किया । जिसके बाद उनके दावे पर मैंने अपनी बात रखी जिसे उन्होने ठंडे मिजाज के साथ सुनी और समझी एवं मुस्कुराहट लिए अपने गृह नगर वापिस चले गए ।

तात्पर्य यह है कि

एक प्याला गरम चाय , बिगड़ी बातों को ठीक कर जाए ।

समय की अनोखी यात्रा

समय की यात्रा है ये, है अनोखी कहानी
हिन्दू ग्रंथो मे छिपी , है इसकी जुबानी
महाभारत के पन्नो में, गूँजती कहानी
राजा काकुदमी की, एक अद्भुत निशानी

कुसस्थली राज्य, द्वारका सी थी दिव्यता
जहां सुंदर कन्या, रेवती की थी भव्यता
अग्निकुंड से प्रकट हुई, दिव्य तेजस्वी
शुभलक्षणों से भरी , गुणो की संपत्ति

जब विवाह का समय आया , चिंता घेरने लगी
कोई उपयुक्त वर न दिखा, मन मे परेशानी बसी
राजा ने निश्चय किया, चलेंगे ब्रह्मलोक
ब्रह्मा से वर मंगेगे, खोजेंगे सुखद लोक

ब्रह्मलोक पहुंचे, देखा अद्भुत नज़ारा
गन्धर्वों का नृत्य, संगीत था प्यारा
सभा हुई खत्म, जब पहुंचे ब्रह्मा के पास
राजा ने झुककर कहा , " सुनिए मेरी है एक आंस"

ब्रह्मा हँसते हुए बोले "हे राजन, सुनो ध्यान "
समय की गति अद्भुत, समझो इसका ज्ञान
पृथ्वी से जब आए यहा, अब सत्ताईस युग बीत चुके
तुम्हारी सूची बेकार, सब वर पहले ही मिट चुके

राजा काकुदमी को लगा, समय का खेल बड़ा
राज्य परिवार सब नष्ट हुआ , हो गया नाश बड़ा
फिर विवाह कैसे होगा, क्या उपाय है मगर ?
ब्रह्मा बोले," बलराम हे, अब तुम्हारी कन्या के लिए उचित वर "

राजा ने किया धन्यवाद, साथ रेवती को लिया
पृथ्वी पर लौटे , देखा स्वरूप नया
धरती का मौसम बदला, रूप भी भिन्न हुआ
मनुष्यों के गुण, बुद्धि मे भी ह्रास हुआ

भागवत पुराण मे जो वर्णन है , अब वही है मिलता
जीव-जन्तु, पेड़ पौधे सब कुछ, सिमटा -सा लगता
आकार घटा, शक्तियों का ह्रास हुआ
मनुष्यों मे बुद्धि ,आध्यात्मिक का अभाव हुआ

राजा काकुदमी अब बिना देर के पहुंचे वहीं
बलराम के पास जाकर, हर बात उन्हे कंही
रेवती और बलराम , थे सुयोग्य उस घड़ी
लेकिन रेवती थी , आकार मे बलराम से बड़ी

राजा ने समझाया, " ये समस्या है विकट"
पर प्रेम मे आकार नहीं, न होती कभी खट- पट
बलराम मुसकराकर बोले , "तुम चिंता मत करो,
प्रेम की शक्ति से, हर बाधा को दूर करो"

कथा यह सिखाती, समय की अद्भुदता
प्रेम, साहस और विश्वास, है जीवन की गुणवत्ता
समय की यात्रा है ये, सुन चकरा जाए माथा
हर युग हर कल्प मे , छिपी है इसकी गाथा

वैभव केसरवानी
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर

क्षेत्रीय कार्यालय – इंदौर मे मनाया गया स्वच्छता पखवाड़ा

ओरिएण्टल इंश्योरेंस
पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश । सबकी सुरक्षा हमारे पास
Oriental insurance
Prithvi, Agni, Jal, Akash Sab ki suraksha hamare paas
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लि.
(भारत सरकार का उपक्रम)